मई माह में
समय को समय देना

१ मई, २०२५

आत्मीय पाठक,

वह क्या है जो चिरकाल तक बना रहता है? वह क्या है जो समय की कसौटी पर खरा उतरता है? वह क्या है जो समय से परे है—या शायद, समय के बाद भी उसका अस्तित्व बना रहता है? वे कौन-से अदृश्य धागे हैं जो भूत को वर्तमान से और वर्तमान को भविष्य से जोड़ते हैं, और हम उन्हें तब कैसे पहचानें जब क्षणांश के लिए ही सही, हमारे बोध में उनकी एक झलक भर दिख जाती है?

मई के माह में क़दम रखते हुए, ये प्रश्न मेरी चेतना में बार-बार कौंध रहे हैं, मेरे मन में उत्सुकता जगा रहे हैं? मई का माह यानी बाबा जी का माह। १९९० के दशक में एक सत्संग के दौरान गुरुमाई जी ने पहली बार मई व अक्टूबर के महीनों को यह नाम दिया था, 'बाबा जी का माह' जो क्रमशः बाबा जी के जन्म व उनकी महासमाधि के माह हैं। सिद्धयोगी इस नाम को सुनकर तुरन्त ही उत्साहित हो गए; उन्हें यह बहुत पसन्द आया और तब से यह नाम प्रचलन में आ गया।

यह अद्भुत है। मई माह को स्पष्ट तौर पर, आगे बढ़ते समय के एक विशिष्ट अंश के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह ग्रिगोरियन कैलेन्डर का एक मान्य भाग है; यह हर वर्ष एक ही समय पर आता है [पाँचवें माह में, अप्रैल के बाद और जून के पहले]; यह विशिष्ट दिनों और सप्ताहों में बँटा होता है। तथापि, चूँकि सिद्धयोग पथ पर हम इस माह को बाबा मुक्तानन्द के साथ जोड़ते हैं—इसे हम बाबा जी के जीवन, बाबा जी की धरोहर के साथ जोड़ते हैं—इसलिए इसमें समयातीत होने का एक आभामण्डल भी है।

और हमें यह महसूस होता है, उदाहरण के लिए, जब हमें प्रकृति में 'बाबा जी के चिह्न' दिखते हैं, जैसे पेड़ों के बीच अंग्रेज़ी के अक्षर 'एम' का आकार [अंग्रेज़ी अक्षर "M" 'एम', बाबा जी के नाम "मुक्तानन्द" का पहला अक्षर है], या एक पंख जो बाबा जी के गेरुए वस्त्रों की छटा लिए हुए हो, या फिर आकाश में लहराते कृष्णवर्णी बादल जो बहुत कुछ नीलबिन्दु जैसे दिखाई देते हैं, जिसका वर्णन करना बाबा जी को बहुत प्रिय था, तब हम बाबा जी की इस समयातीत आभा को महसूस करते हैं।

जब लोग बाबा जी के साथ घटित अपने अनुभव या प्रसंग सुनाते हैं, तब हमें बाबा जी की समयातीत आभा का एहसास होता है। उदाहरण के लिए, मैंने बाबा जी के दर्शन कभी नहीं किए क्योंकि मेरा जन्म बाबा जी के महासमाधि लेने के बाद हुआ। परन्तु, जो सिद्धयोगी बाबा जी के जीवनकाल में उन्हें जानते थे और जिन्हें बाबा जी के दर्शन व सिखावनियों को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके द्वारा सुनाए गए प्रसंगों को जब मैं सुनती हूँ तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे समय लुप्त-सा हो गया हो। उनकी आँखों से छलकते प्रेम में, उनकी रुँधी हुई, मिठासभरी आवाज़ की मृदुलता में, मैं देख पाती हूँ कि बाबा जी *यहीं हैं,* हमारे साथ हैं।

एक फूल खिलता है, और मुरझा जाता है; फिर भी उसकी सुन्दरता, उसकी मनमोहक सुगन्ध उनके मन में छाई रहती है जो उसे याद करते हैं। नदी-तल में पानी सूख जाता है, फिर भी उसके प्रवाह की स्मृति धरती पर अंकित रहती है; मिट्टी और तलछट के बीच टेढ़ी-मेढ़ी दरारों पर नदी अपने पीछे अपनी छाप छोड़ जाती है। अपनी सभी कलाओं में आकार बदलते हुए भी चन्द्रमा सदा पूर्ण ही रहता है। समयातीतता क्या है? क्या यह ऐसा कुछ है जिसे हम जानते-पहचानते हैं या यह ऐसा कुछ है जिसकी हम रचना करते हैं? क्या यह ऐसा कुछ है जिसे हम एक बृहद् रूप दे देते हैं? क्या यह ऐसा कुछ है जिसकी सुरक्षा करने की ज़िम्मेदारी हमारी है? या समयातीत होना एक-साथ ही, यह सब कुछ है?

पूरे माह हम इस विषय-वस्तु पर चिन्तन-मनन कर सकते हैं। ११ मई को विश्व के कई भागों में लोग मातृ-दिवस मनाएँगे। जब मैं उन शक्तियों के बारे में सोचती हूँ जो समय की सीमा को लाँघ जाती हैं, जिनका बल व जिनकी शुद्धता तब भी टिकी रहती है जब हम या हमारी परिस्थितियाँ या हमारे आस-पास का संसार भी बदल जाता है, तो तुरन्त ही मेरे मन में दो बातें उभरती हैं, और वे हैं, श्रीगुरु का प्रेम और एक माँ का प्रेम। वस्तुतः, ये दोनों इतने भिन्न भी नहीं हैं। आप चाहें तो सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर यह प्रसंग पढ़ [या पुनः पढ़] सकते हैं कि किस तरह गुरुमाई जी को 'गुरुमाई' के नाम से जाना जाने लगा। यह प्रसंग इस लिंक पर उपलब्ध है : www.siddhayoga.org/mothers-day/source-of-life

१२ मई की पूर्णिमा को हम बाबा जी का चान्द्र जन्मदिवस मनाएँगे। उसके चार दिन बाद, १६ मई को, हम सौरतिथि के अनुसार बाबा जी का जन्मदिवस मनाएँगे। मैंने इस विषय में थोड़ी चर्चा की है कि किस तरह हम बाबा जी की कृपा में शाश्वतता की और बाबा जी के प्रेम में अनन्तता की अनुभूति करते हैं। इसके अतिरिक्त व शायद सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बाबा जी ने जो सिखावनियाँ हमें प्रदान की हैं, उनमें हम उस शाश्वत-तत्त्व को पा लेते हैं [उस अनन्त-तत्त्व से हमारा सामना हो जाता है!]

सिद्धयोग पथ का प्रज्ञान यानी बाबा जी द्वारा, गुरुमाई जी द्वारा प्रदान की गई सिखावनियाँ समयातीत हैं।

पत्र के आरम्भ में मैंने पूछा था कि वह क्या है जो चिरकाल तक बना रहता है। इसका एक उत्तर है : *ज्ञान।* ज्ञान चिरकालीन है। श्रीगुरु की सिखावनियाँ चिरकालीन हैं, क्योंकि वे हर समय और हर स्थान में उपयुक्त हैं।

तथापि, एक महत्त्वपूर्ण चेतावनी भी है। सिखावनियों का समयातीत होना, सिखावनियों का चिरकालीन होना, इस विषय में हमारा *अनुभव* हमारे प्रयत्नों पर निर्भर है अर्थात् सिखावनियों को समझने के, उनका अभ्यास करने व उन्हें अपना बनाने के हमारे प्रयत्नों पर निर्भर है। श्रीगुरु की सिखावनियाँ एक शिष्य में जो रूपान्तरण लाती हैं, उसी रूपान्तरण में सिखावनियों की सच्ची धरोहर का वास है। और यह तभी सम्भव है जब हम तत्परता से व सक्रियता से इसमें भाग लें।

उन सिखावनियों के बारे में सोचें जो गुरुमाई जी 'समय के समक्ष' के भाग के रूप में जनवरी माह से हमें प्रदान कर रही हैं। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि हर दिन की सिखावनी सुन्दर होगी, दिलचस्प और काव्यात्मक होगी, और उसे पढ़ने व मन-ही-मन दोहराने से हमें सुख-शान्ति व सहारा मिलेगा। परन्तु इसके आगे? उस सिखावनी के साथ हम *और* क्या करेंगे? इस समय प्रश्न यही है।

उदाहरणार्थ, हम १ मई के लिए गुरुमाई जी द्वारा प्रदान की गई सिखावनी को देखते हैं : *हिरण्यमय समय।* आप कौन-से क़दम उठा सकते हैं ताकि यह सिखावनी आपके लिए और भी स्थायी सच्चाई बन जाए? आपका समय "हिरण्यमय" है यानी स्वर्णमय है, इस जागरूकता के साथ कार्य करने का क्या अर्थ है? आप अपनी समय-सारिणी किस प्रकार बनाते हैं, या किसी विशिष्ट समय पर आप अपना ध्यान किस ओर केन्द्रित करते हैं—इनमें आप क्या परिवर्तन लाएँगे? [निःसन्देह, ये प्रश्न सिखावनी के एक अर्थ पर ही आधारित हैं। इस सिखावनी के अर्थ को समझने के अन्य कई पहलू हो सकते हैं—और उन पहलुओं का भी इसी तरह अन्वेषण किया जा सकता है।]

मई माह के समापन तक हम समय के विषय पर गुरुमाई जी से १३८ सिखावनियाँ प्राप्त कर चुके होंगे। यानी, १३८ अवसर हैं, समय के विषय में नई अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त करने के लिए, समय के प्रति अपने नज़रिए को पुनः नया रूप देने के लिए और अपने जीवन में हितकारी परिवर्तन लाने हेतु क़दम उठाने के लिए। साथ ही, मई का माह वह अन्तिम माह होगा जिसमें हमें गुरुमाई जी से 'समय के समक्ष' के अन्तर्गत सिखावनियाँ प्राप्त होंगी। अगले माह, हमारे अध्ययन का केन्द्रण होगा 'सद्गुण वैभव'।

तब तक, आइए हम इन अगले इकत्तीस दिनों का सर्वोत्तम सदुपयोग करें—बाबा जी के माह का उत्सव मनाते हुए, माँ परमेश्वरी का सम्मान करते हुए और वर्ष २०२५ के लिए श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश का अन्वेषण जारी रखते हुए। तो आइए वैसा ही करें, जैसा गुरुमाई जी अपने नववर्ष-सन्देश में सिखाती हैं और सचमुच हम *अपने समय को अपने लिए लाभप्रद बनाएँ।*

आदर सहित,
ईशा सरदेसाई

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।